RESEARCH FRONT

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

भारत नेपाल सम्बन्ध : एक विश्लेषण

Dr. Akash Gautam

प्रस्तुत शोध में भारत नेपाल और सम्बन्ध विभिन्न चरणों का ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक पद्यतियों से अध्ययन किया गया है। भारत तथा नेपाल मूलतः एक सामन्ती एवं विविधतापूर्ण समाज है। एक राष्ट्र के रूप में इसका इतिहास बहुत पुराना नहीं है। मोटे तौर पर उसकी विदेश नीति को गुट–निरपेक्षता की विदेश नीति के रूप में व्याख्यायित किया गया है। इस नीति के पीछे महज शीत युद्ध की राजनीति से अलग रहने का उद्देश्य नहीं था बल्कि नेपाल के दो सबसे अधिक महत्वपूर्ण पड़ोसियों, भारत तथा चीन के बीच एक संतुलन कायम रखना भी था। एक स्थलरूद्ध, गरीब तथा विकासशील देश के रूप में भारत के साथ उसके द्विपक्षीय–सम्बन्धों, पर बल दिया गया है।

कुंजी–शब्द : राजषाही, राणाशाही, संवैधानिक, राजतंत्र, पंचायत व्यवस्था, सामन्तवाद, लोकतांत्रिक, संसदीय समाजवाद, उपनिवेशवाद, जनआंदोलन, माओवादी आंदोलन ।

भारत के राजनीतिक आन्दोलन, विचारधारा तथा घटनाओं का नेपाल पर निरन्तर गहरा प्रभाव पड़ा है। राणा शासन काल में, जब नेपाल को ब्रिटिश भारत से तथा वहाँ हो रहे आन्दोलनों से अलग रखने का प्रयत्न किया, हम पाते हैं कि तब भी ऐसा सम्भव नहीं हो पाया। चाहे 1857 का विद्रोह हो या 1885 से कांग्रेस के नेतृत्व में चलाया जा रहा भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, नेपाल पर इन गतिविधियों का प्रभाव पड़ा है। नेपाल का आधुनिक और जागृत वर्ग शिक्षा के लिये भारत में आता रहा और उसने राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लिया।

भारतीय राष्ट्रीय नेता यह मानते थे कि जिस प्रकार भारत को अंग्रेजों से स्वतन्त्र होना है, उसी प्रकार राणाओं से नेपाल को स्वतन्त्र होना है और वहाँ प्रजातन्त्र की स्थापना करनी है। 1947 में अंग्रेजों का जाना और भारत में कांग्रेसी नेतृत्व के हाथ में सत्ता का आना राणा शासकों के लिये चिन्ता का विषय था। वास्तव में 1947 से ही नेपाल में राजनीतिक उथल–पुथल होने लगी थी और राणा शासकों पर सुधारों के लिए आन्तरिक व बाहरी दबाव पड़ने लगे थे। नेपाल के प्रति भारत का राजनीतिक दृष्टिकोण आजादी के बाद से ही राजनीतिक विचारधारा से प्रभावित रहा। भारत का यह विचार रहा है, कि नेपाल में लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित एक स्थिर सरकार होनी चाहिए।

भारतीय नेतृत्व, नेपाल में प्रजातांत्रिक मूल्यों पर आधारित राजनीतिक सुधारों की आवश्यकता तो मानता था, लेकिन वह सम्पूर्ण व्यवस्था में एकदम परिवर्तन के खिलाफ था। नेहरू का मानना था कि इससे समस्याएँ और बढ़ सकती हैं। इसलिये उन्होंने नेपाल के लिये 'मध्य मार्ग'का विचार दिया। भारतीय राजनीतिक नेतृत्व यह भी समझता था कि नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना से दोनों देशों में व्यवस्थात्मक व वैचारिक समरूपता बनी रहेगी जोकि एक दूसरे के विचारों, समस्याओं व अपेक्षाओं को समझने में सहायक होगी।

राणा–शासन 1951 में समाप्त हो गया और राजा त्रिभुवन ने भारत के सक्रिय सहयोग से सत्ता संभाली। 1955 तक दोनों देशों की विदेश नीतियों में पूरी तरह तालमेल बना रहा। चीन ने भी भारत और नेपाल के बीच विशेष सम्बन्धों को मान्यता दे दी। 1955 में राजा महेन्द्र ने सत्ता सम्भालते ही नेपाल के राजनैतिक एवं आर्थिक सम्बन्धों को विविधतापूर्ण बनाने की प्रक्रिया शुरू की। नेपाल के अनेक देशों के साथ कूटनीतिक सम्बन्धों की शुरूआत की। भारत के साथ ''विशेष सम्बन्धों'' की नीति से अलग हटकर नेपाल भारत व चीन दोनों के साथ 'समान सम्बन्धों' की नीति पर आ गया। 1955 से 1962 तक नेपाल में भारत के प्रति झुकाव में निरन्तर कमी आती रही, जो कि आंशिक रूप से नेपाल की कूटनीति में आये बदलाव के कारण हुआ तथा अंशतः क्षेत्र में भारत की प्रतिष्ठा में आई आम

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

गिरावट के चलते भी हुआ। नेपाल विदेश नीति के मामलों में भारत पर अत्यधिक निर्भरता के स्थान पर विदेशी सहायता तथा नीतिगत मामलों में जोड़–तोड़ बैठाने में अपेक्षाकृत स्वतंत्र अवस्था तक पहुँचने में सफल रहा।

1960 के अन्त में राजा महेन्द्र ने 1950 की संधि को संशोधित करने की मांग उठाई, साथ ही भारतीय सेनाओं को वापस बुलाए जाने की मांग की। नेपाल के भारत विरोधी रूख का उद्देश्य अनिवार्य रूप से भारत के बिना किसी विरोध के नेपाल में राजसी सर्वोच्चता को स्वीकार करवाने तथा उस राजनैतिक प्रणाली को भूल जाने के लिए कहना था। 1971 में बंगलादेश के अस्तित्व में आने के बाद भारत दक्षिण एशिया में निर्विवाद ताकत के रूप में उभरा। 1972 में राजा महेन्द्र की मृत्यु हुई औरा राजा वीरेन्द्र ने सत्ता संभाली। 1975 में सिक्किम का भारतीय संघ में विलय हो गया। इससे पूर्व 1974 में भारत ने एक शान्तिपूर्ण अणुबम का विस्फोट किया था। ये सब भारत की बढ़ी हुई क्षमताओं के विशिष्ट प्रदर्शन थे, जिससे नेपाल की अपनी स्वतंत्र हैसियत को सुदृढ़ करने की इच्छाएं बढ़ीं। इसलिए, 1975 में राजा वीरेन्द्र ने अपने प्रस्ताव की घोषणा की कि नेपाल को 'शान्ति क्षेत्र' घोषित किया जाना चाहिए।

शान्ति क्षेत्र प्रस्ताव में नेपाल का मानना था कि भारत का विस्तृत आकार, विशाल लोकतन्त्र नेपाल के प्रति दबाव की प्रवृत्ति, नेपाल की राष्ट्रीय पहचान को समाप्त कर देगी। दक्षिणी एशिया की राजनीति में भारत की उभरती मजबूत स्थिति से महाराजा बीरेन्द्र शंकित थे, बांग्लादेश का निर्माण और 18 मई 1974 में पोखरन में भारत द्वारा परमाणु परीक्षण भी नेपाल में भय का कारण बना। सितम्बर 1974 में सिक्किम राज्य का भारत में विलय की घटना भी नेपाल में विरोध का कारण बनी। नेपाल में लोकतांत्रिक गतिविधियों व नेपाली कांग्रेस को भारत द्वारा समर्थन दिए जाने के प्रति भी राजा को शंका थी।

नेपाल में 1950 की सन्धि का महत्व कम करने के लिए 'शान्ति क्षेत्र का प्रस्ताव' महाराजा की एक नई खोज थी। वह अपने दोनों पड़ोसी देशों के साथ समान स्तर पर सम्बन्ध बनाने चाहते थे। शान्ति क्षेत्र प्रस्ताव का ऐलान राजा वीरेन्द्र द्वारा अपने राजतिलक समारोह के अवसर पर किया गया था। राजा वीरेन्द्र ने कहा कि यह प्रस्ताव किसी देश भय के कारण नहीं लाया गया है, क्योंकि नेपाल के अपने पड़ोसी भारत व चीन के साथ निकट सम्बन्ध हैं, बल्कि इस इच्छा के चलते लाया गया है कि हमारी स्वाधीनता तथा स्वतंत्रता को कोई आँच न आने पाये।

भारत ने इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया था, यहाँ तक कि भारत की जनता सरकार ने भी, अपने तीन वर्ष के कार्यकाल में, प्रस्ताव को अस्वीकार नहीं किया। फिर भी उसकी प्रतिक्रिया एक तरह की उदासीनता की रही। नई दिल्ली की प्रतिक्रिया यह थी कि समूचे दक्षिण एशियाई क्षेत्र को शान्ति क्षेत्र घोषित किया जाना चाहिए।

1950 की मैत्री सन्धि, नेपाल के लिए एक आश्वासन ही है। अतः प्रस्ताव का अनुमोदन करना अनावश्यक माना गया। इस बीच, भारत और चीन ने अपने आपसी रिश्तों में कुछ हद तक सामान्य स्थिति की बहाली की दिशा में बढ़ना शुरू कर दिया था। इसके अतिरिक्त अब राजा के वर्चस्व वाली पंचायत प्रणाली का स्थान लोकतंत्र ने लिया है। 1991 में जी. पी. कोइराला के नेपाल के प्रधानमंत्री बनने के बाद दोनों देशों के मध्य सम्बन्धों में सुधार के प्रयत्न किए गए। अप्रैल 1995 में नेपाल के प्रधानमंत्री मनमोहन अधिकारी की भारत यात्रा से दोनों देशों के सम्बन्धों में प्रगाढ़ता आई। 1996 में काठमाण्डू में वाणिज्य स्तर की बातचीत के दौरान 5 वर्षों के लिए भारत–नेपाल व्यापार सन्धि हुई। नेपाल में निर्मित वस्तुएं अब सीमा शुल्क से मुक्त और बिना किसी प्रतिबन्ध के भारतीय बाजार में आ सकती हैं। 1994–98 के वर्षों में नेपाल गम्भीर राजनैतिक अस्थिरता से पीड़ित रहा। लेकिन भारत–नेपाल मैत्री बनी रही और सितम्बर 1996 में दोनों देशों के बीच 'महाकाली नदी समझौता' सम्पन्न हुआ। जनवरी 1999 में भारत और नेपाल के बीच सात वर्ष की पारगमन सन्धि सम्पन्न हुई। 2005 ई. में

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

जब नेपाल नरेश द्वारा लोकतान्त्रिक सरकार की बर्खास्तगी कर दी गई, तक भारत ने इसकी आलोचना करते हुए नेपाल को दी जाने समस्त सैन्य सहायता पर रोक लगा दी।

2006 में नेपाल में लोकतन्त्र की बहाली के साथ भारत–नेपाल सम्बन्धों में सुखद स्थिति बन गई। इस समय भी नेपाल के आर्थिक संकट से पीड़ित होने पर भारत ने उसकी सहायता की। वर्ष 2008 में नेपाल में राजशाही को समाप्त कर संघीय लोकतान्त्रिक गणराज्य घोषित किया गया। माओवादी नई सरकार के नवनियुक्त प्रधानमंत्री पुष्प कमल दहल 'प्रचण्ड' ने सितम्बर 2008 में भारत की यात्रा की, जिससे दोनों देशों के बीच मैत्री सम्बन्ध बढ़े। नेपाल में माओवादियों के सत्ता से दूर होने के बाद माधव कुमार नेपाल प्रधानमंत्री बने। माधव कुमार ने 16 फरवरी, 2010 को भारत की यात्रा की। यह यात्रा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दोनों देशों ने रेलवे लिंक बढ़ाने, वायु सेवा को सम्वर्द्धित करने, नेपाल में पॉलिटेक्निक की स्थापना तथा एक सम्मेलन कक्ष की स्थापना के सम्बन्ध में चार समझौते पर हस्ताक्षर किए।

नेपाल तीन तरफ से भारत से घिरा है और विश्व के किसी भी हिस्से से सम्पर्क करने या किसी हिस्से तक आने–जाने के लिए उसे भारत का सहारा लेना पड़ता है। नेपाल का केवल 20 प्रतिशत क्षेत्र ऐसा है जो कि मुख्य रूप से काठमाण्डू घाटी तथा तराई में है जहाँ सघन कृषि की जा सकती है तथा बड़े व मध्यम उद्योग लगाए जा सकते हैं। तराई की अर्थव्यवस्था धीरे–धीरे भारत की अर्थव्यवस्था से जुड़ गई है। वहाँ का उत्पादन मुख्य रूप से भारत की मण्डियों में ही आता है। औद्योगिक उत्पादन नेपाल में बहुत कम बिक पाता है। इस माल के खरीदरार भी अधिकतर भारतीय ही हैं। इस रूप में तराई की अर्थव्यवस्था की भारत पर निर्भरता स्पष्ट है। दैनिक आवश्यकता की वस्तुओं के लिये भी नेपाल भारत पर निर्भर है। एक समय नेपाल का करीब 90 प्रतिशत व्यापार भारत के साथ था। धीरे–धीरे इसमें कमी तो आई है लेकिन अभी भारत के साथ नेपाल का व्यापार सर्वाधिक है। नेपाल हमेशा से ही भारतीय वस्तुओं की खपत का केन्द्र रहा है। दूसरे देशों के साथ व्यापार के लिए नेपाल को आवागमन सुविधाएँ भारत ही उपलब्ध कराता है। भारत के अलावा नेपाल का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार भी सीमित है। बाहर से जो सामान नेपाल में आता है उसकी भी खपत नेपाल में नहीं होती, या तो विभिन्न रूपों में वह भारत में आता है या भारतीय नेपाल जा कर खरीदते हैं। भारतीय व्यापारियों एवं उद्यमियों की नेपाल में आर्थिक अभिरूचि रही है। यह एक तथ्य है कि नेपाल का अधिकतर व्यापार भारतीय मूल के निवासियों के हाथों में है।

नेपाल में सदियों से बसे अनेक भारतीय मूल के व्यक्तियों ने काफी अचल सम्पत्ति अर्जित की है। यद्यपि यह तथ्य नेपालियों में आक्रोश का कारण बनता जा रहा है। तस्करी की समस्या कई बार सीमा के पार उद्योगों के होने से तैयार माल बहुत आसानी से नेपाल के सीमावर्ती क्षेत्रों में बिकता देखा जा सकता है और जब भी नेपाल में औद्योगिक या कृषि उत्पादन अधिक होता है तो उसकी खपत नेपाल के पर्वतीय क्षेत्रों में होने की अपेक्षा निकटवर्ती भारतीय बाजार में होती है। अर्थव्यवस्था का यह रूप आपसी अन्तनिर्भरता व सम्बन्धों के स्वरूप को दर्शाता है। नेपाल के पास नदियों के पानी के रूप में विपुल प्राकृतिक स्रोत हैं। परन्तु बिना भारत की सहायता के नेपाल इन स्रोतों का दोहन नहीं कर सकता। अतः यह स्पष्ट है कि भारत व नेपाल दोनों मिलकर ही नदी जल विकास परियोजनाओं की सार्थक क्रियान्वयन कर सकते हैं। नेपाल से निकलने वाली सभी नदियां अंततः भारत में प्रवेश करती हैं अतः इन नदियों का प्रकोप नेपाल के साथ–साथ भारत को भी सहन करना पड़ता है। दोनों देश मिल–जुलकर ही इस समस्या का समाधान निकाल सकते हैं।

नेपाल में संयुक्त उद्यम भारतीय उद्योगपतियों के द्वारा चलाए जा रहे हैं। दोनों देशों की जितनी पारस्परिक निर्भरता बढ़ेगी, नेपाल भारत के उतना ही नजदीक होगा। नेपाल के अकुशल व बेरोजगार व्यक्ति भारत में छोटी–छोटी नौकरियों के लिये आते रहे हैं। भारतवर्ष में नेपालियों व भारतीयों में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया जाता है। इतनी सरलता से दूसरे देश में जाकर समानता के

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

आधार पर नौकरियाँ प्राप्त कर लेना शायद ही किसी अन्य देश में सम्भव हो। यह सब मुख्य रूप से नेपाल–भारत के मध्य सदियों से घनिष्ठ सम्बन्धों के कारण ही सम्भव हो पाया है। इससे यह स्पष्ट है कि नेपाल की भारत पर आर्थिक निर्भरता बहुआयामी है। नेपाल ने अपनी पंचवर्षीय योजना में ढांचागत विकास के स्थान पर उत्पादकता वाले क्षेत्र कृषि व उद्योग के विकास में रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया। अतः 1975 के बाद भारत ने संयुक्त उद्यम की प्राथमिकता दी। भारत 1975–80 के बीच नेपाल को सबसे अधिक सहायता देने वाला देश रहा। 1971 के बाद भारत ने जिन परियोजनाओं के लिए आर्थिक सहायता दी वे हैं– सड़कों का विकास, उद्योगों का स्थापना व विकास हेतु जल स्रोतों के दोहन का कार्य आदि, जिसमें देवीघाट, पंचेश्वर व करनाली परियोजनाएं प्रमुख थीं।

1989–1990 बीच नेपाल में राजनैतिक बदलाव आया और संसदीय स्वरूप की सरकार शुरू हुई। नये राजनैतिक नेता अपनी सुरक्षा तथा सामरिक हितों को प्रभावित करने वाले मामलों पर भारतीय संवेदनशीलता की प्रशंसा करते थे। इसलिए जून 1990 में अंततः गतिरोध का हल निकाल लिया गया। भारत व्यापार एवं पारगमन को समेटने वाली पृथक संधियों के लिए राजी हो गया और सभी पारम्परिक पारगमन रास्तों को खोल देने के अलावा तीन अन्य रास्तों को भी मंजूरी दे दी। बदले में, नेपाल भी चीन से हथियारों का आयात न करने, भारतीय मालों पर शुल्कों की कमी करने तथा भारतीय कामगारों पर से काम की परमिट प्रणाली में ढील देने के लिए राजी हो गया। 1991 में, भारत तथा नेपाल दोनों ही में, आम चुनाव हुए जहाँ नेपाल में नेपाली कांगेस सत्ता में आई वहीं नई दिल्ली में कांग्रेस (इ) ने सरकार बनाई। दिसम्बर 1991 में नेपाली प्रधानमंत्री ने भारत का दौरा किया तथा व्यापार, पारगमन तथा जल संसाधन विकास पर एक समझौते सहित कछ समझौतों पर हस्ताक्षर किए। ज्यों ही नेपाल ने एक बहुदलीय जनतांत्रिक प्रणाली की तरफ बढ़ना शुरू किया, भारत तथा नेपाल के सम्बन्धों में तनाव का एक प्रमुख स्त्रोत विदा हो गया। नेपाल की राजतंत्रीय प्रणाली के लिए भारत की जनतांत्रिक राजनैतिक प्रणाली हमेशा शंका का कारण बनी रही थी। जब भी नेपाल में जनतांकि सुधारों की मांग उठती थीं, तब हमेशा भारत पर ही यह आरोप लगाया जाता था कि वह नेपाली शासन को अस्थिर बना रहा है। जनतांत्रिक ढंग से निर्वाचित कुलीनों में भारत के बारे में उस तरह का बोध नहीं रहेगा।

नेपाल के सामाजिक आर्थिक विकास तांबे और पीतल के बर्तनों, घरेलू उपकरणों, सैनिक साज सामानों आनाज के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर था। लेकिन इस संधि के बाद भारत के कारखानों में बने सामान नेपाल के बाजार में पहुंच गये और उसके उद्योगों का ह्रास शुरू हो गया। 1950 में स्वतंत्र भारत के साथ सम्पन्न संधि के बाद तो यह काफी हद तक भारत का अर्ध उपनिवेश बन गया। इस संधि से जो असमान सम्बन्ध पैदा हुए उन पर आधारित विभिन्न व्यापार सम्बन्धों के जरिये नेपाल पर भारत अपना व्यापारिक, औद्योगिक और वित्तीय एकाधिकार मजबूत करता रहा। अर्ध औपनिवेशिक सम्बन्धों के विविध आयाम होते हैं लेकिन इन सब आयामों का अंतिम लक्ष्य आर्थिक शोषण और उत्पीड़न ही होता है।

नेपाल के विदेश व्यापार 1950 के दशक तक लगभग 95 प्रतिशत भारत के साथ होता था। बाद के दशकों में भारत के साथ व्यापार घट कर लगभग 30 प्रतिशत हो गया है। एक महत्वपूर्ण बात यह है कि नेपाल और भारत के बीच खुली सीमा होने के कारण कुल व्यापार का लगभग एक तिहाई हिस्सा गैरकानूनी है और इस प्रकार सरकारी आंकड़ों में व्यापार की राशि जो बतायी जाती है। उससे यह कहीं अधिक है। नेपाल के वाणिज्य और उद्योग पर लगभग एक दर्जन भारतीय अरबपतियों का नियंत्रण है जिनमें से अधिकांश मारवाड़ी हैं। यही वजह है देश में एक असंतोष का वातावरण दिखाई देता है और नेपाली जनता विरोध प्रदर्शन आदि का सहारा लेती है।

नेपाल के प्राकृतिक जल संपदा के मामले में नेपाल दुनिया का दूसरा सबसे समृद्ध देश है। और भावी औद्योगीकरण तथा आम उपभोग के काम में भारत के लिए आने वाली सबसे सस्ते और आसान उर्जा स्रोत हैं। 1996 में तो तथाकथित 'समेकित महाकाली विकास परियोजना समझौते' के

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

जरिये भारत ने समूची महाकाली नदी पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया। कोशी और गण्डकी समझौते तो पूरी तरह अर्ध औपनिवेशिक थे, क्योंकि इन समझौतों ने नेपाल के तराई क्षेत्र को पानी से एकदम वंचित कर दिया जबकि यह क्षेत्र अनाज की पैदावार की दृष्टि से अत्यन्त समृद्ध था। भारत ने सीमा पर नेपाल वाले क्षेत्र में बांधों पर निर्माण कर के पानी का बहुत बड़ा हिस्सा सिंचाई के लिए खुद ले लिया और नेपाल के हिस्से में बहुत कम पानी आया। 10 जून 1990 को भारत और नेपाल की एक 'संयुक्त विज्ञप्ति' जारी हुई जिसमें नेपाल की सभी नदियों को भारत के लिए 'समान हिस्से वाली नदियों' के रूप में चिन्हित किया गया और इस प्रकार इन स्रोतों के भविष्य के दोहन का रास्ता तैयार कर लिया गया। 1993–94 के वित्तीय वर्ष के पहले आठ महीनों में नेपाली राष्ट्र बैंक के आंकड़ों के अनुसार भारत ने 28.3 प्रतिशत (12777.8 मिलियन नेपाली रुपयों में) कारोबार किया। यह नेपाली के कुल व्यापार के 44760.3 मिलियन नेपाली रुपयों के अनुपात में था। लेकिन नेपाल के व्यापार घाटे में 59.6 प्रतिशत (18479.1 मिलियन रुपयों में) उठान देखा गया जिसमें भारत के साथ घाटा लगभग 9316. 4 मिलियन नौ अरब 31 करोड़ चौंसठ लाख था जो वहाँ कुछ व्यापार घाटे से आधे से जरा सा कम था। यह भी ध्यान देने योग्य था कि भारत को नेपाल का निर्यात 51.9 प्रतिशत 1675.7 मिलियन ऊपर बढ़ा जबकि भारत को नेपाल का आयात 38.4 प्रतिशत बढ़ा जो 10992.1 मिलियन रुपयों का था। उस समय तक उपलब्ध आंकड़ों को देखते हुए नेपाल को भारत का निर्यात 1994–95 में 3 अरब 77 करोड़ से बढ़कर अगले वर्ष यानी 1995–96 में पांच अरब 36 करोड़ तथा नेपाल से आयात 114.89 करोड़ से 166.95 करोड़ जा पहुंचा।

नेपाल की अर्ध सामन्ती कृषि व्यवस्था पर भारतीय पूंजीवाद की आंतरिक कमजोरी उसे मजबूर करती है कि वह नेपाल जैसे देशों में राजनीतिक हस्तक्षेप करे और इसके लिए असमान संधियों का इस्तेमाल करे। भारत की आंतरिक समस्याओं को सुलझाने में सक्षम जनतंत्र मॉडल तैयार नहीं हो जाता, भारत और नेपाल के सम्बन्ध सद्भावपूर्ण नहीं हो सकते क्योंकि किसी भी देश की विदेश नीति अन्ततः उसकी घरेलू नीति का विस्तार है। जनतंत्र की बहाली के बाद गठित पहली सरकार में मंत्री रह चुके कुशल राजनीतिज्ञ डा. देवेन्द्र राज पाण्डेय का मानना है कि 'नेपाल और चीन के बीच अच्छे सम्बन्धों और बढ़ते सहयोग को भारत ने हमेशा अपने खिलाफ चीन का षड्यन्त्र माना है। भारत यह नहीं स्वीकार करता कि नेपाल दोनों पड़ोसी देशों चीन और भारत के साथ समान दूरी रखे– वह नेपाल के साथ अपेन विशेष सम्बन्धों का दावा करता है। पाण्डेय ने चीन के सहयोग से निर्मित कोदारी राजमार्ग का उल्लेख किया है जो काठमाण्डो को ल्हासा से जोड़ता है। उनका कहना है कि इस सड़क के बनने से भारत को काफी नाराजगी हुई और उसे लगा कि नेपाल उसके सुरक्षा हितों की अनदेखी कर रहा है। परन्तु इस सड़क को बने हुए 25 वर्ष से अधिक समय बीत चुके हैं लेकिन अभी तक इसके जरिये ऐसा कोई काम नहीं हुआ है जिससे भारत के हितों को चोट पहुंची हो। इस प्रकार इन विद्वानों के आलोचना के मुद्दे सारतः एक ही जैसे हैं भले ही अभिव्यक्ति में अन्तर क्यों न हो। इसीलिए यह जरूरी है कि भारतीय जनमत इन मुद्दों पर गंभीरता के साथ विचार करे।

भूमण्डलीकरण के कारण नेपाल में भी निजीकरण की लहर चल पड़ी है। देश की अत्यन्त महत्वपूर्ण नदी कर्णाली पर एनॅरान जैसी बहुराष्ट्रीय कंपनियों की आंखे लगी हुई हैं। नेपाल में राष्ट्रीय पूंजीवाद के विकास को प्रभावित किया है। इसीलिए माओवादी जनयुद्ध के सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक कार्य हर तरह के अर्ध औपनिवेशिक शोषण और उत्पीड़न को झेल रही जनता के सभी वर्गों और तबकों को गोलबन्द करते हुए इन अर्ध औपनिवेशिक जंजीरों को तोड़ना है और एक नये तरह के राष्ट्रीय पूंजीवाद का मार्ग प्रशस्त करना है।

सन्दर्भ सूची

1. गैरोला, वाचस्स्पति, 1973, भारत के उत्तर पूर्व सीमान्त देश, हिन्दी समिति, सूचना विभाग, लखनऊ. पृष्ठ 126–127.

ISSN
(Print) 2320 – 6446, (Online) 2320 – 8341
Impact Factor – 1.115

2. श्रीवास्तव, के.पी. 1986, नेपाल का इतिहास, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पृष्ठ 120.
3. अग्रवाल, निर्मला 2003, भारत नेपाल सम्बन्ध, ए.बी.डी. पब्लिसर्स, जयपुर, पृष्ठ 129.
4. हिन्दुस्तान, 7 फरवरी 2007.
5. राष्ट्रीय सहारा, 16 अक्टूबर 2007, 'हस्तक्षेप' पृष्ठ 02.
6. दैनिक जागरण, 25 नवम्बर 2006.
7. उधव पी, पेकुरील, 2007, माओइस्ट मूवमेन्ट इन नेपालः ए सोशियोलॉजिकल प्रस्पेकटिव, एड्रोइट पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 28.
8. जैन, गिरिलाल 1959, इण्डिया मीट्स चाईना इन नेपाल, एशिया पब्लिशिंग हाउस, बाम्बे. पृष्ठ 9.
9. एटकिन्सन, सी.टी. 1929, ए कलेकशन ऑफ ट्रीटीज, इंगेजमेंट्स, सनद, रिलेटिंग, टू इण्डिया एण्ड नेबरिंग कन्ट्रीज, सेन्ट्रल पब्लिसिंग ब्रान्च, न्यू दिल्ली, पृष्ठ 118
10. शाह, ऋषिकेश, 1990, मार्डन नेपालः ए पोलिटिकल हिस्ट्री, वाल्यूम दू, मनोहर पब्लिकेशन, दिल्ली, पृष्ठ 49
11. .त्रिपाठी, डी.पी., 'थिंक इण्डिया क्वाटर्ली, वाल्यूम 13, न0 4,अक्टूबर–दिसम्बर 2010, पृष्ठ 353.
12. मुनी, एस.डी. 1992, इण्डिया एण्ड नेपालः ए चैलेजिंग रिलेशनशिप, कोणार्क प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 35.
13. रेग्मी, डी.आर. 1952, विदर नेपाल, काठमाण्डू, पृष्ठ 114.
14. घोबले, टी.आर. 1986,चाइना नेपाल रिलेशन्स एण्ड इण्डिया, नई दिल्ली पृष्ठ 137
15. हिन्दुस्तान, टाइम्स, 17अप्रैल 1972, नई दिल्ली.
16. द हिन्दुस्तान टाइम्स, 24 जुलाई, 1991.
17. श्रेष्ठ, आर.एन.1999, नेपाल एण्ड बगला देश, ग्लोबल स्टडीज एशिया, ए.बी.सी. आक्सफोर्ड , पृष्ठ 43.
18. छिब्बर, भारती 2008, इण्डो नेपाल रिलेशनः द इकोनोमिक डायमेन्सन, वर्ल्ड फोकस, सितम्बर , पृष्ठ 361
19. सिंह, प्रिंयका, इण्डो नेपाल रिलेशनः रिक्की रोड मैप, वर्ल्ड फोकस, मई 2006, अंक 317 पृष्ठ 24.
20. बाबूराम भट्टराई के साक्षात्कार पर आधारित, समकालीन तीसरी दुनिया, अक्टूबर 2009, पृष्ठ 29.
21. टाइम्स ऑफ इण्डिया, 14 फरवरी 2009.
22. वार्षिक रिपोर्ट, 1995–1996, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार, पृष्ठ 86.
23. शर्मा, मनीषा 2000, नेपाल एक चित्रावलोकन, न्यू रायल बुक कम्पनी, लखनऊ.पृष्ठ 10.
24. श्रीवास्तव, के.पी. 1986, नेपाल का इतिहास, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली. पृष्ठ 83.
25. राहुल, राम, 1996, रायल नेपालःए पोलिटिकल हिस्ट्री, विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली. पृष्ठ 22.
26. उद्धव पी., पेकोरल, 2007, माओइस्ट मोमेण्ट इन नेपालः सोशियोलोजिकल प्रस्पेक्टिव, एड्रोइट पब्लिकेशन, नई दिल्ली. पृष्ठ 29.
27. रिचर्ड, बाहार्ट 1984, द फारमेशन ऑफ द नेशन स्टेट इन नेपाल, जनरल ऑफ एशियन स्टडीज, पृष्ठ 129.
28. न्यूजवीक, 10 सितम्बर 1973.
29. उदित राज, "अधूरे जनतंत्र की कवायद", आज, 24 अगस्त 2006.
30. बुद्धि ज्योति, 20 अप्रैल 2010, इलाहाबाद.
31. सिंह, के.एन. 1970, भारत–नेपाल सम्बन्ध, सन्मार्ग प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ 45.
32. द हिन्दु, 21 जुलाई 1994.
33. इकोनोमिक्स टाइम्स, 3 दिसम्बर 1994.
34. टाइम्स ऑफ इण्डिया, 10 अप्रैल 1 995.
35. द हिन्दुस्तान टाइम्स, 10 अप्रैल 1995.
36. इण्डिया न्यूज, 22 अगस्त 2009.
37. दैनिक जागरण, 25 दिसम्बर 2006.